# Bal Varta In Hindi

## बच्चों की कहानियाँ

# प्यासा कौआ

एक बार की बात है किसी जंगल में एक कौआ रहता था। एक दिन उसे बड़ी जोर से प्यास लगी। वह पानी की तलाश में वह बहुत दूर तक उड़ता रहा, परन्तु कहीं भी उसे पानी नहीं मिला। जब वह बहुत थक गया तो उसे आखिर में एक घड़ा दिखाई दिया जिसमे बहुत थोड़ा-सा पानी था।

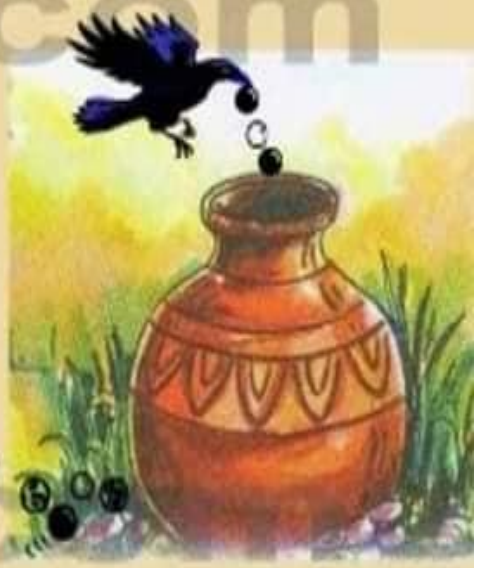

जब कौए ने पानी पीना चाहा तो उसकी चोंच पानी तक नहीं जा सकी। उसने हर तरह से पानी पीने की कोशिश की, पर सब बेकार गई। कौआ बेचैन हो उठा, तभी उसे एक उपाय सूझा। उसने आस-पास से कंकड़ एकत्रित करे और एक-एक करके अपनी चोंच से घड़े में तब तक डाले जब तक पानी ऊपर नही आ गया। फिर कौए ने जी भरकर पानी पिया।

इस तरह कौए ने अपनी मेहनत और सहनशक्ति से अपनी प्यास बुझायी और अपनी जान बचाई।

## प्रसंगतः न्यूटन का संयम

एक बार सर आइजक न्यूटन ने लगातार कई दिनों तक दिन-रात मेहनत करके एक शोधपत्र तैयार किया। काम पूरा होने के बाद उन्होंने राहत की सांस ली। वह शोधपत्र के पन्नों को एक जगह रखकर कुछ देर के लिए बाहर चले गए। जहां वह शोधपत्र रखा था, वहीं एक मोमबत्ती जल रही थी। उस समय न्यूटन का पालतू कुत्ता जैकी अकेला था। अकेले में मोमबत्ती की परछाई को देख कर जैकी उस पर कूद पड़ा। जैकी के ऐसा करते ही जलती हुई मोमबत्ती मेज पर रखे शोधपत्र पर जा गिरी और देखते ही देखते कागजों ने आग पकड़ ली। कई दिनों की मेहनत पल भर में ही राख हो गई। कुछ ही देर बाद न्यूटन जब वापस लौटे तो यह दुर्घटना देखकर आपा खो बैठे लेकिन उन्होंने तुरंत ही स्वयं को संभाला। उन्होंने मन ही मन सोचा कि जो राख हो चुका वह तो वापस आ नहीं आ सकता फिर परेशान होने से क्या फायदा। जैकी को नजदीक देखकर वह समझ गए कि उसी के कारण यह सब हुआ है। फिर वह जैकी की तरफ देखकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, 'तुम क्या जानो जैकी कि तुमने मेरी मेहनत को मिट्टी में मिला दिया है। खैर, अब तो जो हो गया सो हो गया। गुस्सा या पश्चाताप करने से कुछ होगा नहीं। इसलिए बेहतर है कि मैं नए सिरे से अपना काम शुरू करूं।' न्यूटन उसी समय शोधपत्र फिर से तैयार करने में जुट गए। बाद में जिसने भी यह वाकया सुना उसने न्यूटन के धैर्य और लगन की तारीफ की।

THEYOGESHKUMARR

# मूर्ख को सीख

एक जंगल में एक पेड़ पर गौरैया का घोंसला था। एक दिन कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। ठंड से कांपते हुए तीन-चार बंदरों ने उसी पेड़ के नीचे आश्रय लिया। एक बंदर बोला ''कहीं से आग तापने को मिले तो ठंड दूर हो सकती है।''

दूसरे बंदर ने सुझाया ''देखो, यहां कितनी सूखी पत्तियां गिरी हैं। इन्हें इकट्ठा कर हम ढेर लगाते हैं और फिर उसे सुलगाने का उपाय सोचते हैं।''

बंदरों ने सूखी पत्तियां का ढेर बनाया और फिर गोल दायरे में बैठकर सोचने लगे कि ढेर को कैसे सुलगाया जाए। तभी एक बंदर की नजर दूर हवा में उड़ते एक जुगनू पर पड़ी और वह उछल पड़ा। उधर ही दौड़ता हुआ चिल्लाने लगा ''देखो, हवा में चिंगारी उड़ रही है। इसे पकड़कर ढेर के नीचे रखकर फूंक मारने से आग सुलग जाएगी।''

''हां हां!'' कहते हुए बाकी बंदर भी उधर दौड़ने लगे। पेड़ पर अपने घोंसले में बैठी गौरैया यह सब देख रही थी। उससे चुप नहीं रहा गया। वह बोली '' बंदर भाइयो, यह चिंगारी नहीं जुगनू है।''

एक बंदर क्रोध से गौरैया की देखकर गुर्राया ''मूर्ख चिडिया, चुपचाप घोंसले में दुबकी रह। हमें सिखाने चली है।''

इस बीच एक बंदर उछलकर जुगनू को अपनी हथेलियों के बीच कटोरा बनाकर कैद करने में सफल हो गया। जुगनू को ढेर के नीचे रख दिया गया और सभी बंदर लगे चारों ओर से ढेर में फूंक मारने।

गौरैया ने सलाह दी ''भाइयों! आप लोग गलती कर रहे हैं। जुगनू से आग नहीं सुलगेगी। दो पत्थरों को टकराकर उससे चिंगारी पैदा करके आग सुलगाइए।''

बंदरों ने गौरैया को घूरा। आग नहीं सुलगी तो गौरैया फिर बोल उठी ''भाइयों! आप मेरी सलाह मानिए, कम से कम दो सूखी लकड़ियों को आपस में रगड़कर देखिए।''

सारे बंदर आग न सुलगा पाने के कारण खींजे हुए थे। एक बंदर क्रोध से भरकर आगे बढ़ा और उसने गौरैया पकड़कर जोर से पेड़ के ऊपर मारा। गौरैया फड़फड़ाती हुई नीचे गिरी और मर गई।

# दो मुर्गे

दो मुर्गे आपस में बात करते करते अपनी अपनी मजबूती का दवा करने लगे। उसमे से एक ने बोला "चलो मैदान में कूदो वहां पता चल जायेगा की कौन कितना मजबूत है।" इस बात को सुनते ही दूसरा मुर्गा गुस्से में जमींन पर कूद पड़ा और पहले मुर्गे को ललकार के निचे बुलाने लगा। दोनों मुर्गे मैदान में आमने सामने थे।

और दूसरे मुर्गे ने पहले मुर्गे को धराशायी कर दिया और ख़ुशी के मारे उर उर के घायल मुर्गे पे ताना मारने लगा। इसी बिच ऊपर से एक बाज मुर्गे को उड़ता देख तुरंत निचे आया और झपट कर उसको अपने चोंच से पकड़ कर आसामान में लेता गया।कहानी से सीख :अभिमान ले डूबता है

# चालाक खरगोश

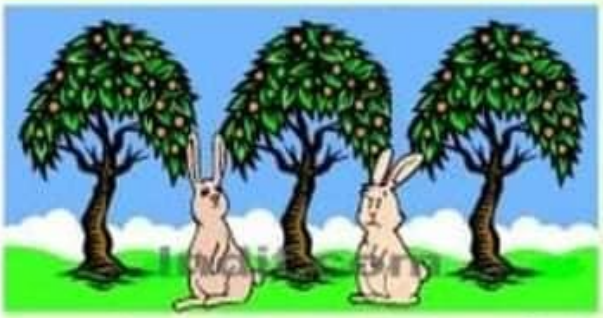

एक बार एक चीकू नाम का खरगोश था । एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ बाग में धूम रहा था जब उसकी पत्नी ने पेड़ पर मीठे-मीठे फल लटके देखे तो उसके मुँह में पानी आ गया । उसने चीकू से फल तोड़कर लाने को कहा । इस पर चीकू ने कहा कि यह बाग एक भेड़िये का है जो बहुत ही खूँखार है । अगर उसे पता चल गया कि हमने फल तोड़े है तो वह हम दोनों को मार कर खा जायेगा । परन्तु चीकू की पत्नी उसके समझाने पर भी ना मानी । हारकर चीकू को फल तोड़ने जाना पड़ा। चीकू ने जैसे ही फल तोड़ने शुरू करे, वहाँ भेड़िया आ गया । चीकू फौरन फल लेकर भगा और पास पड़े एक ड्रम में घूस गया और उस ड्रम में फल रखकर बाहर आकर चुपचाप खड़ा हो गया । तभी भेड़िया वहाँ आ गया और उसने चीकू से पूछा कि क्या उसने किसी खरगोश को वहाँ से फल ले जाते हुए देखा है । चीकू फौरन समझ गया कि भेड़िये ने उसे पहचाना नहीं । उसने भेड़िये से कहा कि - अभी-अभी एक खरगोश को मैने इस ड्रम में घूसते हुए देखा है । उसके पास बहुत से फल थे ।

भेड़िया ड्रम के पास गया तो उसे उसमें से फलों की खुशबू आ रही थी । भेड़िया खरगोश को मारने के लिए उस ड्रम में घूस गया । चालाक चीकू के फटाफट ड्रम का ढकन बंद कर दिया । भेड़िया ड्रम के अन्दर ही मर गया । चीकू और उसकी पत्नी उस बाग के मालिक बन गए । इस तरह चीकू ने अपनी बुद्धि से न सिर्फ अपनी जान बचायी बल्कि उस बाग का मालिक भी बन गया ।

उस गुफा में एक गीदड़ रहता था। थोड़ी देर बाद वह वापस आया तो उसे गुफा के बाहर किसी के पैरों के निशान दिखाई दिये। उसे यह निशान किसी बड़े एवं खतरनाक जानवर के प्रतीत हुए। उसे किसी खतरे का एहसास हुआ।

गीदड़ बहुत चालाक और सयाना था। उसने सोचा कि गुफा में जाने से पहले देखे मामला क्या है। उसने जोर से गुफा को आवाज़ लगाई – "गुफा ! ओ गुफा !" लेकिन जवाब कौन देता?

गीदड़ ने फिर आवाज़ लगाई, "अरे मेरी गुफा, तू जवाब क्यों नही देती ? आज तुझे क्या हो गया ? हमेशा मेरे लौटने पर तू मेरा स्वागत करती है। आज क्या हो गया। अगर तूने जवाब न दिया तो मैं किसी दूसरी गुफा में चला जाऊंगा।"

गीदड़ की बात सुनकर शेर ने सोचा कि यह गुफा तो बोलकर गीदड़ का स्वागत करती है। आज मेरे यहां होने की वजह से शायद डर गई है। अगर गीदड़ का स्वागत नहीं किया तो वह चला जाएगा।

ऐसा विचार कर शेर अपनी भारी आवाज़ में जोर से बोला – "आओ, आओ मेरे दोस्त, तुम्हारा स्वागत है।"

शेर की आवाज़ सुनकर गीदड़ वहां से भाग गया।



Download All Type PDF : https://pdfseva.com/ 

# बोलती गुफा

एक भूखा शेर शिकार की खोज में जंगल में घूम रहा था।

घूमते-घूमते वो थक गया। उसकी भूख भी बढ़ गई। अकस्मात् उसे एक गुफा नज़र आई। शेर ने सोचा कि इस गुफा में ज़रूर कोई जानवर रहता होगा। अच्छा हो मैं उस झाड़ी में छिप जाऊं। ज्यों ही वह निकलेगा मैं उसे धर दबोचूंगा।

शेर ने काफी देर तक गुफा के बाहर इंतज़ार किया, मगर कोई भी जानवर वहाँ से बाहर नहीं आया। तब शेर ने सोचा कि लगता है वह जानवर इस वक्त गुफा में ना होकर कहीं बाहर गया है। इस लिये उसे गुफा के अन्दर जाकर उसका इंतज़ार करना चाहिए। जैसे ही वह गुफा के अन्दर आएगा वह उसे खा जाएगा।

ऐसा सोचकर शेर गुफा के अन्दर जाकर छिप गया।

(1)

क्रमश:

# चालाक बन्दर

किसी नदी के किनारे एक बहुत बड़ा पेड़ था । उस पर एक बन्दर रहता था । उस पेड़ पर बड़े मीठे फल लगते थे । बन्दर उन्हे भरपेट खाता और मौज उड़ाता । वह अकेले ही मजे में दिन गुजार रहा था ।

एक दिन एक मगर उस नदी में से पेड़ के नीचे आया । बन्दर के पूछने पर मगर ने बताया की वह वहाँ खाने की तलाश में आया है । इस पर बन्दर ने पेड़ से तोड़कर बहुत से मीठे फल मगर को खाने के लिए दिए। इस तरह बन्दर और मगर में दोस्ती हो गई । अब मगर हर रोज़ वहाँ आता और दोनों मिलकर खूब फल खाते । बन्दर भी एक दोस्त पाकर बहुत खुश था ।

एक दिन बात-बात में मगर ने बन्दर को बताया की उसकी एक पत्नी है जो नदी के उस पार उनके घर में रहती है । तब बन्दर ने उस दिन बहुत से मीठे फल मगर को उसकी पत्नी के लिए साथ ले जाने के लिए दिए ।

इस तरह मगर रोज़ जी भरकर फल खाता और अपनी पत्नी के लिए भी लेकर जाता। मगर की पत्नी को फल खाना तो अच्छा लगता पर पति का देर से घर लौटना पसन्द नहीं था । एक दिन मगर की पत्नी ने मगर से कहा कि अगर वह बन्दर रोज-रोज इतने मीठे फल खाता है तो उसका कलेजा कितना मीठा होगा । मैं उसका कलेजा खाऊँगी। मगर ने उसे बहुत समझाया पर वह नहीं मानी ।

मगरमच्छ दावत के बहाने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाकर अपने घर लाने लगा । नदी बीच में उसने बन्दर को अपनी पत्नी की कलेजे वाली बात बता दी । इस पर बन्दर ने कहा कि वो तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आया हे । वह उसे हिफाजत से पेड़ पर रखता है। इसलिए उन्हे वापिस जाकर कलेजा लाना पड़ेगा । मगर बन्दर को वापिस पेड़ के पास ले गया । बन्दर छलांग मारकर पेड़ पर चढ़ गया । उसने हँसकर कहा कि- "जाओ मूर्खराजा, घर जाओ और अपनी पत्नी से कहना कि तुम दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हो । भला कोई भी अपना कलेजा निकालकर अलग रख सकता है ।"

बन्दर की इस समझदारी से हमे पता चलता है कि मुसीबत के वक्त हमें कभी धैर्य नहीं खोना चाहिए।

# कौआ चला मोर बनने

एक कौए ने बहुत सारे मोर पंख इकट्ठे किए और उन्हें अपने तन पर लगा लिए। उसे अपना नया रूप बहुत अच्छा लगा और उसने निश्चय किया कि अब वह कौओं के साथ नहीं, बल्कि मोरों के साथ रहेगा। इसके बाद वह अपने पुराने साथियों का तिरस्कार करके वहाँ से चला गया और मोरों के झुंड में मिलने की कोशिश करने लगा। हालाँकि, मोरों ने तुरंत पहचान लिया कि उनके बीच में एक कौआ आ गया है। उन्होंने अपनी चोंचों से नोंच-नोंचकर कौए के तन पर लगे मोर पंख नोंच डाले और उसका मखौल उड़ाने लगे। अपमानित और दुखी कौआ भारी मन से अपने घर वापस लौट आया। सारे साथी कौए सिर हिलाते उसके पास आ पहुँचे और कहने लगे, "तुम बहुत ही नीच जीव हो! अगर तुम अपने ही पंखों से संतुष्ट रहते तो तुम्हें दूसरों से इस तरह का अपमान नहीं सहना पड़ता और न ही तुम्हारे अपने लोगों के बीच तुमसे घृणा की जाती।"

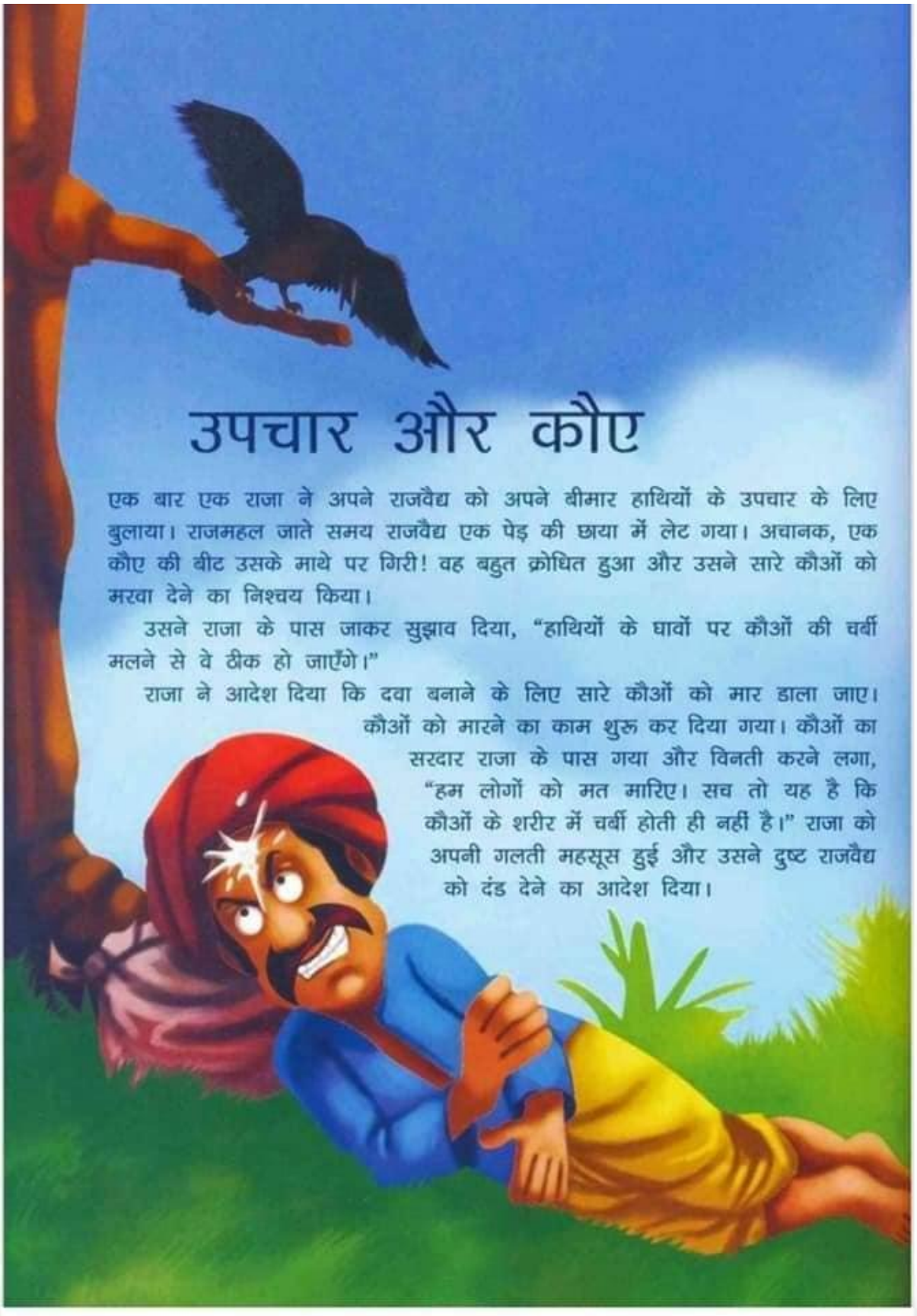

# उपचार और कौए

एक बार एक राजा ने अपने राजवैद्य को अपने बीमार हाथियों के उपचार के लिए बुलाया। राजमहल जाते समय राजवैद्य एक पेड़ की छाया में लेट गया। अचानक, एक कौए की बीट उसके माथे पर गिरी! वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने सारे कौओं को मरवा देने का निश्चय किया।

उसने राजा के पास जाकर सुझाव दिया, "हाथियों के घावों पर कौओं की चर्बी मलने से वे ठीक हो जाएँगे।"

राजा ने आदेश दिया कि दवा बनाने के लिए सारे कौओं को मार डाला जाए। कौओं को मारने का काम शुरू कर दिया गया। कौओं का सरदार राजा के पास गया और विनती करने लगा, "हम लोगों को मत मारिए। सच तो यह है कि कौओं के शरीर में चर्बी होती ही नहीं है।" राजा को अपनी गलती महसूस हुई और उसने दुष्ट राजवैद्य को दंड देने का आदेश दिया।

# शेर और तीन बैल

एक बार की बात है। तीन बैल आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे।

वे साथ मिलकर घास चरने जाते और बिना किसी राग-द्वेष के हर चीज आपस में बाँटते थे। एक शेर काफी दिनों से उन तीनों के पीछे पड़ा था, लेकिन वह जानता था कि जब तक ये तीनों एकजुट हैं, तब तक वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

शेर ने उन तीनों को एक-दूसरे से अलग करने की चाल चली।

उसने बैलों के बारे में अफवाहें उड़ानी शुरू कर दीं। अफवाहें सुन-सुनकर उन तीनों के बीच गलतफहमी पैदा हो गई।

धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से जलने लगे। आखिरकार एक दिन उनमें झगड़ा हो गया और वे अलग-अलग रहने लगे। शेर के लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। उसने इसका पूरा लाभ उठाया और एक-एक करके तीनों को उसने मार डाला और खा गया।

एकता में ही शक्ति होती है।

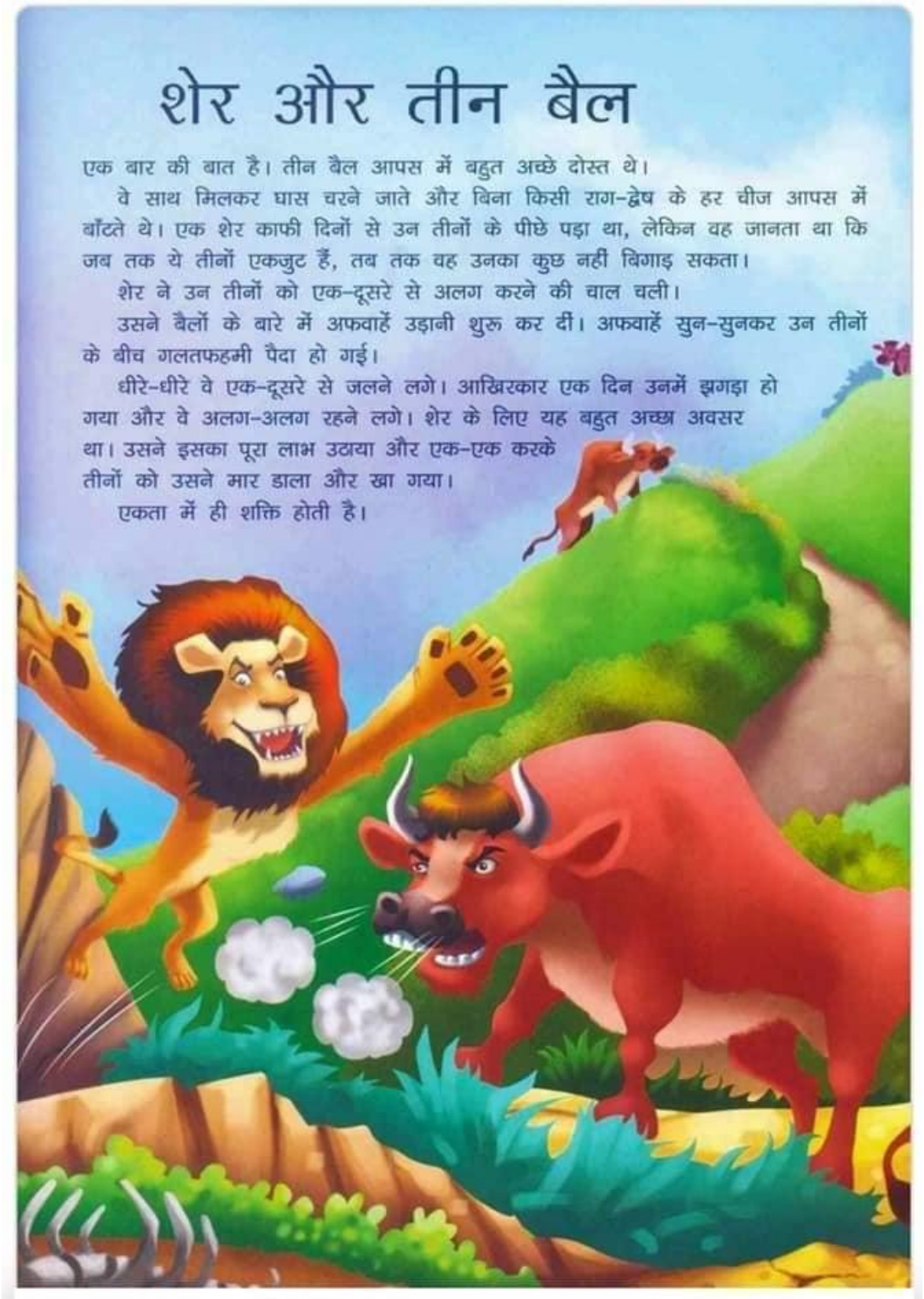

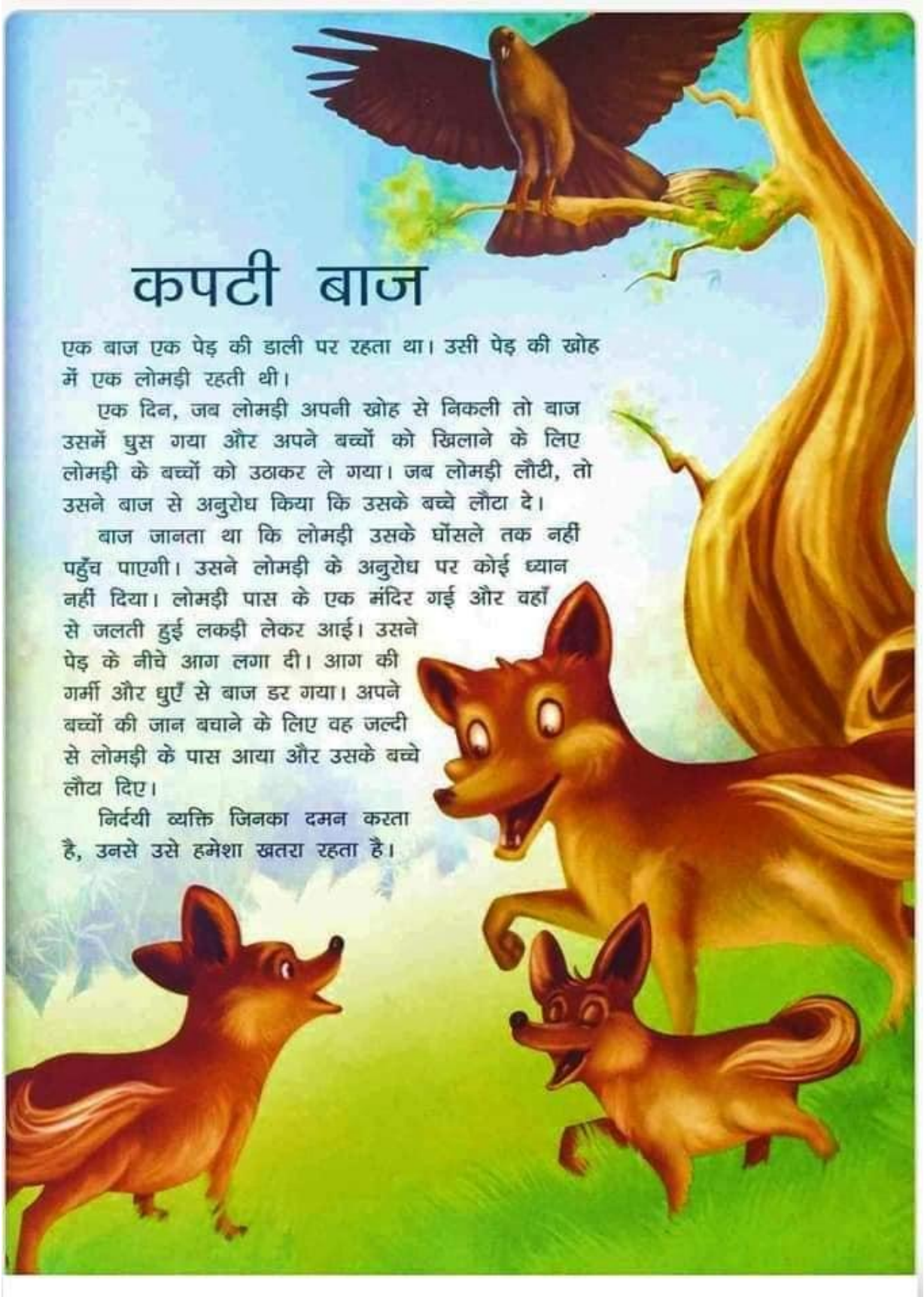

# कपटी बाज

एक बाज एक पेड़ की डाली पर रहता था। उसी पेड़ की खोह में एक लोमड़ी रहती थी।

एक दिन, जब लोमड़ी अपनी खोह से निकली तो बाज उसमें घुस गया और अपने बच्चों को खिलाने के लिए लोमड़ी के बच्चों को उठाकर ले गया। जब लोमड़ी लौटी, तो उसने बाज से अनुरोध किया कि उसके बच्चे लौटा दे।

बाज जानता था कि लोमड़ी उसके घोंसले तक नहीं पहुँच पाएगी। उसने लोमड़ी के अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया। लोमड़ी पास के एक मंदिर गई और वहाँ से जलती हुई लकड़ी लेकर आई। उसने पेड़ के नीचे आग लगा दी। आग की गर्मी और धुएँ से बाज डर गया। अपने बच्चों की जान बचाने के लिए वह जल्दी से लोमड़ी के पास आया और उसके बच्चे लौटा दिए।

निर्दयी व्यक्ति जिनका दमन करता है, उनसे उसे हमेशा खतरा रहता है।

# मक्खी का लालच

एक बार एक व्यापारी अपने ग्रहक को शहद बेच रहा था। तभी अचानक व्यापारी के हाथ से फिसलकर शहद का बर्तन गिर गया । बहुत सा शहद भूमि पर बीखर गया । जितना शहद ऊपर-ऊपर से उठाया जा सकता था उतना व्यापारी ने उठा लिया । परन्तु कुछ शहद फिर भी ज़मीन पर गिरा रह गया ।

कुछ ही देर में बहुत सी मक्खियाँ उस ज़मीन पर गिरे हुए शहद पर आकर बैठ गयीं। मीठा - मीठा शहद उन्हे बड़ा अच्छा लगा । वह जल्दी-जल्दी उसे चाटने लगीं। जब तक उनका पेट भर नहीं गया वह शहद चाटती रहीं ।

जब मक्खियों का पेट भर गया और उन्होने उड़ना चाहा, तो वह उड़ ना सकीं। क्योंकि उनके पंख शहद में चिपक गए थे । उड़ने के लिए उन्होने बहुत कोशिश की परन्तु वह फिर भी उड़ ना पायीं। वह जितना छटपटाती उनके पंख उतने चिपकते जाते । उनके सारे शरीर में शहद लगता जाता ।

काफी मक्खियाँ शहद में लोट-पोट होकर मर गायीं । बहुत सी मक्खियाँ पंख चिपकने से छट पटा रहीं थीं । परन्तु तब भी नई मक्खियाँ शहद के लालच में वहाँ आती रहीं। मरी और छट पटाती मक्खियों को देखकर भी वह शहद खाने का लालच नहीं छोड़ पाई ।

मक्खियों की दुर्गति और मूर्खता देखकर व्यापारी बोला - जो लोग जीभ के स्वाद के लालच में पड़ जाते है, वह इन मक्खियों के समान ही मूर्ख होते हैं। स्वाद के थोड़ी देर के सुख उठाने के लालच में वह अपनें स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं । रोगी बनकर तड़पते है और जल्द ही मर जाते हैं।

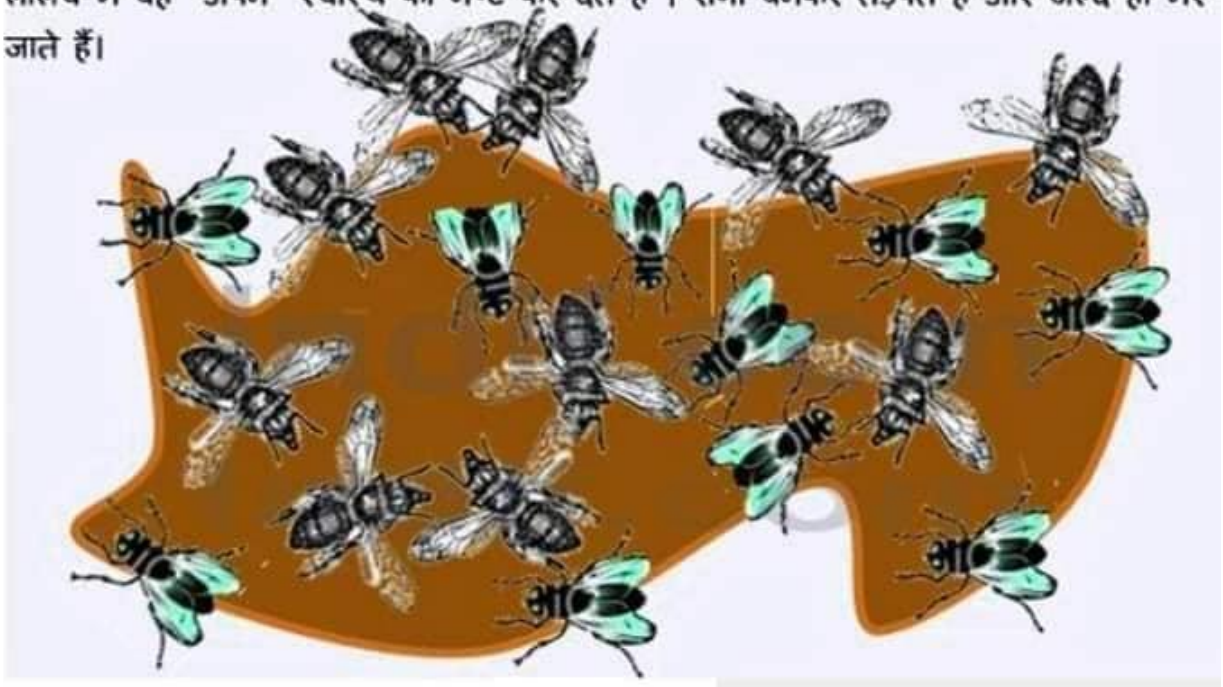

# गधा और धोबी

एक निर्धन धोबी था। उसके पास एक गधा था। गधा काफी कमजोर था क्योंकि उसे बहुत कम खाने-पीने को मिल पाता था।

एक दिन, धोबी को एक मरा हुआ बाघ मिला। उसने सोचा, "मैं गधे के ऊपर इस बाघ की खाल डाल दूँगा और उसे पड़ोसियों के खेतों में चरने के लिए छोड़ दिया करूँगा। किसान समझेंगे कि वह सचमुच का बाघ है और उससे डरकर दूर रहेंगे और गधा आराम से खेत चर लिया करेगा।"

धोबी ने तुरंत अपनी योजना पर अमल कर डाला। उसकी योजना काम कर गई।

एक रात, गधा खेत में चर रहा था कि उसे किसी गधी की रेंकने की आवाज सुनाई दी। उस आवाज को सुनकर वह इतने जोश में आ गया कि वह भी जोर-जोर से रेंकने लगा।

गधे की आवाज सुनकर किसानों को उसकी असलियत का पता लग गया और उन्होंने गधे की खूब पिटाई की!

इसीलिए कहा गया है कि अपनी सचाई नहीं छिपानी चाहिए।

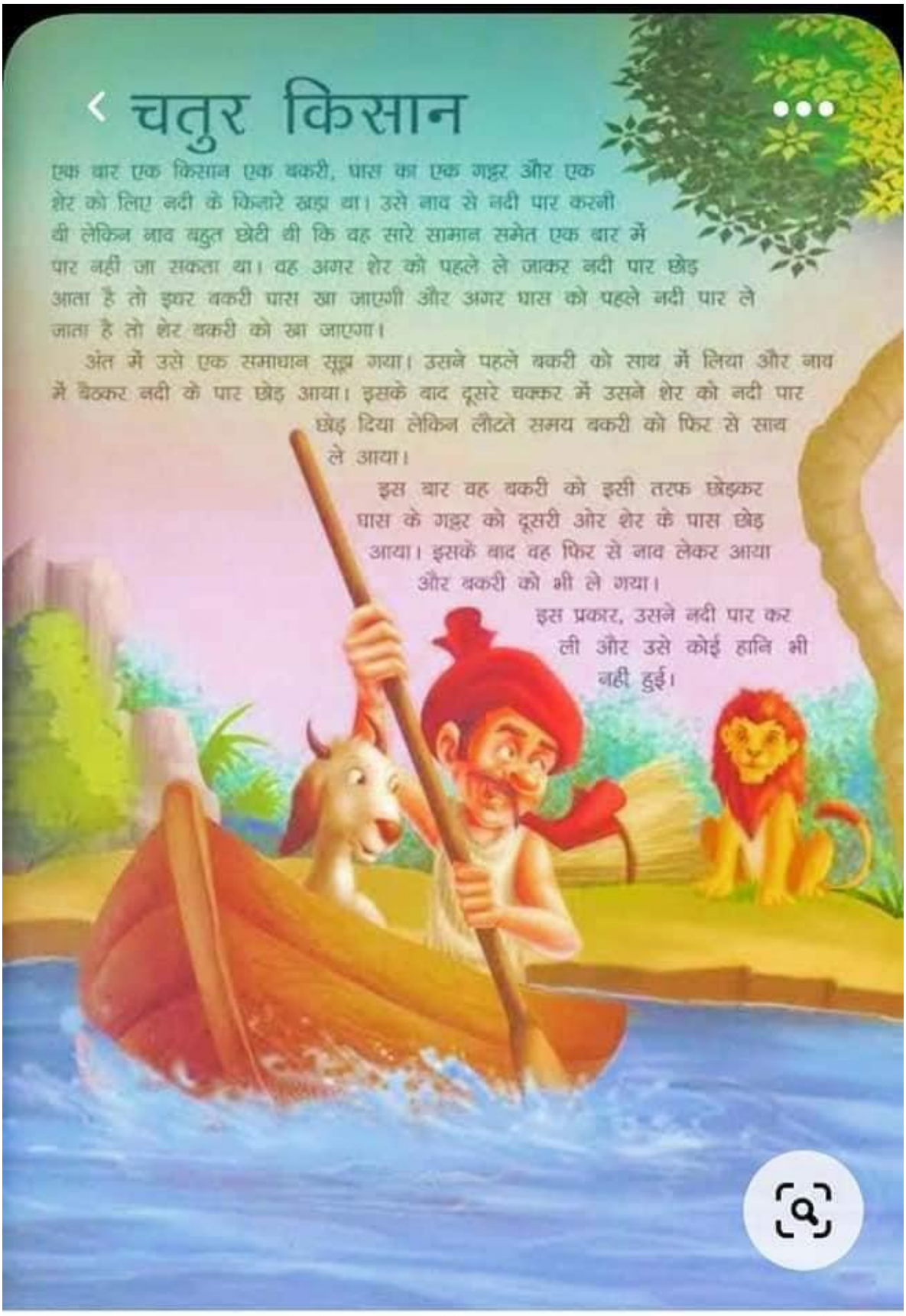
चतुर किसान
एक बार एक किसान एक बकरी, घास का एक गट्ठर और एक शेर को लिए नदी के किनारे खड़ा था। उसे नाव से नदी पार करनी थी लेकिन नाव बहुत छोटी थी कि वह सारे सामान समेत एक बार में पार नहीं जा सकता था। वह अगर शेर को पहले ले जाकर नदी पार छोड़ आता है तो इधर बकरी घास खा जाएगी और अगर घास को पहले नदी पार ले जाता है तो शेर बकरी को खा जाएगा।
अंत में उसे एक समाधान सूझ गया। उसने पहले बकरी को साथ में लिया और नाव में बैठकर नदी के पार छोड़ आया। इसके बाद दूसरे चक्कर में उसने शेर को नदी पार छोड़ दिया लेकिन लौटते समय बकरी को फिर से साथ ले आया।
इस बार वह बकरी को इसी तरफ छोड़कर घास के गट्ठर को दूसरी ओर शेर के पास छोड़ आया। इसके बाद वह फिर से नाव लेकर आया और बकरी को भी ले गया।
इस प्रकार, उसने नदी पार कर ली और उसे कोई हानि भी नहीं हुई।

# शेर और चूहा

एक बार एक शेर अपनी गुफा में सो रहा था । तभी एक चूहा कहीं से आकर शेर के ऊपर कूदने लगा । जिससे शेर की नींद टूट गयी । शेर को चूहे पर इतनी ज़ोर से गुस्सा आया कि उसने उसे अपने पंजों में जकड़ लिया और उसे मारने का सोचने लगा। चूहा बहुत डर गया। उसने काँपते हुए शेर से कहा - "हे शेर राजा ! मुझे माफ कर दिजिये, मुझ से बहुत भारी भूल हो गई । अगर आप मुझे जाने देंगें तो आप का बहुत उपकार होगा और आपके इस उपकार को मैं वक्त आने पर जरूर चुका दूँगा।" यह सुनकर शेर को चूहे पर दया आ गई और उसने उसे जाने दिया । पर वह मन ही मन हँसा कि भला यह छोटा सा चूहा मेरा उपकार क्या चुकाएगा ।

समय बीतता गया ओर एक दिन हमेशा की तरह शेर शिकार की तलाश में जंगल में घूम रहा था कि एक शिकारी ने उसे चलाकी से अपने जाल में पकड़ लिया। शेर अपनी सहायता के लिए जोर-जोर से दहाड़ मारने लगा । शेर की अवाज सुनकर चूहा वहाँ आया । शेर को जाल में फँसा देखकर उसने तुरन्त अपने नुकीले दाँतों से शिकारी का जाल काट दिया और शेर को आज़ाद कर दिया । शेर ने चूहे का बहुत धन्यवाद किया । उस दिन शेर को समझ आया कि किसी भी प्राणी की काबलीयत उसके भारी रूप से नहीं लगानी चाहिए और कभी छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं करना चाहिए । हमेशा सबकी मदद करनी चाहिए क्योकिं जो दूसरों की मदद करता है, उसकी भी सब मदद करते हैं ।

# बिल्ली और बंदर

एक गाँव में दो बिल्लियाँ रहती थीं । वह आपस में बहुत प्यार से रहती थीं। उन्हे जो कुछ मिलता था, उसे आपस में बाँटकर खाया करती थीं। एक दिन उन्हे एक रोटी मिली। उसे बराबर-बराबर बाँटते समय उनमें झगड़ा हो गया । एक बिल्ली को अपनी रोटी का टुकड़ा दूसरी बिल्ली के रोटी के टुकड़े से छोटा लगा । परन्तु दूसरी बिल्ली को अपनी रोटी का टुकड़ा बड़ा नहीं लगा।

जब दोनों बिल्लियाँ किसी समझौते पर नहीं पहुँच पाई तो दोनों बिल्लियाँ एक बंदर के पास गयीं। उन्होनें बंदर को सारी बात बताई और उससे न्याय करने के लिये कहा। सारी बात सुनकर बंदर एक तराजु लेकर आया और दोनों टुकड़े एक-एक पलडें में रख दिये। तोलते समय जो पलड़ा भारी हुआ, उस वाली तरफ से उसने थोड़ी सी रोटी तोड़कर अपनें मुंह में डाल ली। अब दूसरी तरफ का पलड़ा भारी हो गया, तो बंदर ने उस तरफ से रोटी तोड़कर अपनें मुंह में डाल ली। इस तरह बंदर कभी इस तरफ से तो कभी उस तरफ से रोटी ज्यादा होने का कहकर रोटी तोड़कर अपनें मुंह में डाल लेता।

दोनों बिल्लियाँ चुपचाप बंदर के फैसले का इंतज़ार करती रही। परन्तु जब बिल्लियों ने देखा कि रोटी के दोनों टुकड़े बहुत छोटे-छोटे रह गये तो वह बंदर से बोलीं कि - "आप चिन्ता ना करें, हम अपने आप बँटवारा कर लेंगी।"

इस पर बंदर बोला - " जैसा आप ठीक समझो, परन्तु मुझे भी अपनी मेहनत की मजदूरी मिलनी चाहिए।" इतना कहकर बंदर ने बाकी बचे हुए रोटी के दोनों टुकड़े अपने मुँह में भर लिए और बिल्लियाँ को वहाँ से भगा दिया।

दोनों बिल्लियों को अपनी गलती का बहुत दुख हुआ और उन्हे समझ आ गया कि "आपस की फूट बहुत बूरी होती है और दूसरे इसका फायदा उठा सकते हैं।"